

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

कृषि एवं ग्राम विकास संबंधी गांधी के विचार एवं प्रयोग: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार निर्मल

शोधार्थी, वि० वि० गाँधी विचार विभाग, तिलकामांझी भागलपुर वि० वि०, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author: * डॉ. नीरज कुमार निर्मल

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23452263>

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र महात्मा गांधी के कृषि, कृषक स्वावलंबन तथा समग्र ग्रामीण पुनर्गठन संबंधी दार्शनिक दृष्टिकोण एवं ऐतिहासिक प्रयोगों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। गांधी का ग्राम स्वराज केवल राजनीतिक विकेंद्रीकरण का ढांचा नहीं था, बल्कि यह एक पारिस्थिकीय, नैतिक एवं आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का समन्वित प्रारूप था। आधुनिक औद्योगीकरण और अनियंत्रित नगरीकरण की विभीषिका के बरक्स गांधी ने 'ग्राम केंद्रित अर्थव्यवस्था' की वकालत की, जहाँ कृषि प्राथमिक संबल है तथा कुटीर व खादी उद्योग उसके पूरक। इस पत्र में दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स और टॉलस्टॉय फार्म से लेकर भारत में साबरमती, वर्धा एवं सेवाग्राम आश्रमों में किए गए व्यावहारिक कृषि प्रयोगों, जैविक खाद निर्माण, गोपालन तथा विकेंद्रीकृत ग्रामीण उत्पादन प्रणालियों का विश्लेषण किया गया है। समकालीन कृषि संकट, मृदा क्षरण तथा ग्रामीण पलायन के दौर में गांधीवादी कृषि दर्शन की सतत उपादेयता को भी यहाँ रेखांकित किया गया है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 07-08-2026
- Accepted: 14-10-2026
- Published: 18-10-2026
- MRR:4(10); 2026: 155-158
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

निर्मल नी कु, कृषि एवं ग्राम विकास संबंधी गांधी के विचार एवं प्रयोग: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):155-158.

Access this Article Online



www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: ग्राम स्वराज, गांधीवादी कृषि, आत्मनिर्भरता, सर्वोदय, खादी एवं ग्रामोद्योग, सेवाग्राम, जैविक कृषि।

1. प्रस्तावना

महात्मा गांधी का सामाजिक-आर्थिक दर्शन पश्चिमी आधुनिकतावाद के उस मॉडल के सीधे विरोध में खड़ा था जो अत्यधिक मशीनीकरण, केंद्रीयकृत उत्पादन और उपभोक्तावाद पर टिका था। गांधी के लिए भारत की आत्मा उसके सात लाख गांवों में बसती थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी थी कि "यदि गांव नष्ट हो जाएंगे, तो भारत भी नष्ट हो जाएगा"।¹

गांधी का चिंतन केवल पुस्तकीय या सैद्धांतिक नहीं था; यह उनके निरंतर चल रहे 'सत्य के प्रयोगों' का परिणाम था। जहाँ तत्कालीन औपनिवेशिक नीतियाँ कृषि को केवल राजस्व वसूली और कच्चे माल के निर्यात का साधन मानती थीं, वहीं गांधी ने कृषि और ग्रामीण जीवन को मानव अस्तित्व की गरिमा और अहिंसक समाज रचना की धुरी बनाया।² उनके अनुसार, शोषणविहीन समाज की स्थापना तभी संभव है जब अर्थव्यवस्था 'जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं' में आत्मनिर्भर हो, और यह आत्मनिर्भरता केवल सुदृढ़ कृषि एवं समृद्ध ग्राम संरचना से ही प्राप्त की जा सकती है।³

2. ग्राम स्वराज की अवधारणा: दार्शनिक एवं सैद्धांतिक आधार

गांधी का 'ग्राम स्वराज' राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वायत्तता का घोषणापत्र था। ग्राम स्वराज का मूल तत्व स्वावलंबन और पारस्परिक सहयोग का सुंदर समन्वय था।

विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था और स्वदेशी

गांधी मानते थे कि उत्पादन का संकेंद्रण हिंसा और शोषण को जन्म देता है। इसलिए, उन्होंने बड़े पैमाने के उत्पादन के स्थान पर 'जनसाधारण द्वारा उत्पादन' का सिद्धांत दिया।⁴ स्वदेशी का अर्थ यह था कि व्यक्ति सबसे पहले अपने निकटतम पड़ोसियों की सेवाओं और उत्पादों का उपयोग करे। कृषि के संदर्भ में इसका तात्पर्य था कि गाँव की भूमि पर सबसे पहले स्थानीय आबादी के लिए अन्न, दालें, फल और कपास उगाई जाए, न कि औपनिवेशिक मुनाफे के लिए नकदी फसलें।⁵

'ब्रेड लेबर' (रोटी के लिए श्रम) का सिद्धांत

जॉन रस्किन की पुस्तक *अनट्रू दिस लास्ट* और लियो टॉलस्टॉय के विचारों से प्रेरित होकर गांधी ने 'शरीर-श्रम' को प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य माना।⁶ उनका मानना था कि जो व्यक्ति उत्पादन में शारीरिक श्रम नहीं करता, वह परजीवी है। कृषि कार्य शरीर-श्रम का सबसे विशुद्ध रूप है। यदि समाज का प्रत्येक बौद्धिक व अभिजात्य वर्ग भी मिट्टी से जुड़ेगा, तो सामाजिक गैर-बराबरी और वर्ग-भेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे।⁷

सर्वोदय और न्यासिता

गांधी का 'सर्वोदय' समाज के अंतिम व्यक्ति के उदय की बात करता है। भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर गांधी का दृष्टिकोण 'न्यासिता' के सिद्धांत पर आधारित था। उनके अनुसार, भूमि किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति नहीं है, बल्कि ईश्वर की है।⁸ भूस्वामियों को स्वयं को भूमि का वास्तविक मालिक न मानकर पूरे गाँव के कल्याण का 'ट्रस्टी' समझना चाहिए।⁹

3. गांधी के कृषि संबंधी विचार: पर्यावरण, मृदा और गो-अर्थशास्त्र

गांधीवादी कृषि आधुनिक अर्थ में 'पारिस्थितिकीय एवं प्राकृतिक कृषि' (Ecological Agriculture) की पूर्वगामी थी। हरित क्रांति से दशकों पूर्व गांधी ने उन खतरों को भांप लिया था जो रासायनिक उर्वरकों और मशीनों के अत्यधिक प्रयोग से उत्पन्न हो सकते थे।

मृदा संरक्षण और जैविक खाद (कंपोस्ट)

गांधी ने मिट्टी को जीवित इकाई माना। उनका स्पष्ट मत था कि जो कुछ मिट्टी से लिया जाता है, उसे प्राकृतिक रूप में वापस लौटाया जाना चाहिए। सेवाग्राम आश्रम में गांधी ने मानव अपशिष्ट और पशु अपशिष्ट को वैज्ञानिक रूप से कंपोस्ट खाद में बदलने पर विशेष बल दिया।¹⁰ उन्होंने लिखा कि "गांवों की गंदगी और अपशिष्ट वास्तव में अपशिष्ट नहीं हैं, बल्कि यह वह सोना है जो खेतों की उर्वरता बढ़ाता है"।¹¹

गो-आधारित कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था

गांधी के चिंतन में गाय केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु थी। उन्होंने 'गोरक्षा' को केवल भावनात्मक मुद्दा न बनाकर वैज्ञानिक और आर्थिक आधार दिया:

- **गोवंश आधारित ऊर्जा:** ट्रैक्टरों के स्थान पर बैलों की ऊर्जा का उपयोग, जिससे ग्रामीण पूंजी गाँव में ही बनी रहे और मृदा संधन न हो।¹²
- **दुग्ध एवं पोषण सुरक्षा:** बच्चों और ग्रामीणों के लिए पौष्टिक आहार का स्रोत।
- **गोबर एवं गोमूत्र:** जैविक खाद और कीटनाशक के रूप में उपयोग, जिससे कृषि की इनपुट लागत शून्य हो सके।¹³

नकदी फसलें बनाम खाद्य संप्रभुता

औपनिवेशिक काल में नील, अफीम और जूट जैसी नकदी फसलों के विस्तार ने अकालों को जन्म दिया। गांधी ने किसानों को चेताया कि वे केवल बाज़ार के लालच में आकर अपनी खाद्य आत्मनिर्भरता को दांव पर न लगाएं।¹⁴ प्रत्येक गाँव को सबसे पहले अपने अन्न, दूध और वस्त्र (कपास) की आवश्यकता पूरी करने योग्य फसल चक्र अपनाना चाहिए।¹⁵

4. गांधी के व्यावहारिक प्रयोग: आश्रमों से राष्ट्र निर्माण तक

गांधी केवल उपदेशक नहीं थे, वे एक कठोर प्रायोगिक शोधकर्ता थे। उनके विचार आश्रमों की प्रयोगशालों में तपे थे।

दक्षिण अफ्रीका के प्रयोग: फीनिक्स और टॉलस्टॉय फार्म

- **फीनिक्स सेटलमेंट (1904):** यहाँ गांधी ने प्रत्येक परिवार को खेती के लिए दो-ढाई एकड़ जमीन दी। प्रेस का कार्य और दैनिक जीवन पूरी तरह से स्वयं की खेती और बागवानी पर आधारित था।¹⁶
- **टॉलस्टॉय फार्म (1910):** यहाँ आश्रमवासियों ने बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया, फलदार वृक्ष लगाए और पूर्णतः आत्मनिर्भर भोजन प्रणाली विकसित की। यहाँ गांधी ने पाया कि सामुदायिक खेती से श्रम विभाजन और सामाजिक समरसता सहज ही स्थापित होती है।¹⁷

भारत में कृषि और कृषक आंदोलन

- **चंपारण सत्याग्रह (1917):** यह भारत में गांधी का पहला बड़ा कृषक प्रयोग था। तिनकठिया प्रथा के अंतर्गत जबरन नील की खेती के विरुद्ध किसानों को एकजुट कर गांधी ने यह सिद्ध किया

कि किसानों के अधिकार और भूमि की स्वतंत्रता राष्ट्रीय आंदोलन की पहली शर्त है।¹⁸

- **खेड़ा सत्याग्रह (1918):** फसल नष्ट होने पर लगान माफी की मांग को लेकर किसानों का अहिंसक प्रतिरोध, जिसने भारतीय किसानों में निर्भयता का संचार किया।¹⁹

साबरमती और सेवाग्राम आश्रम

1936 में वर्धा के निकट सेवाग्राम (पहले सेगांव) में बसना गांधी का ऐतिहासिक निर्णय था। उन्होंने संकल्प लिया कि वे उसी गांव में रहेंगे जहाँ कोई बुनियादी सुविधा नहीं थी और आम ग्रामीणों की जीवनशैली अपनाएंगे।²⁰

- सेवाग्राम में गांधी ने उन्नत बीज चयन, हाथ से धान कूटने, कच्ची घानी से तेल पेरने, चक्की से आटा पीसने और खादी कटाई को अनिवार्य बनाया।²¹
- उन्होंने जे.सी. कुमारप्पा के साथ मिलकर **अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ (AIVIA)** की स्थापना की, जिसने ग्रामीण कारीगरों, चर्मकारों और कृषकों के लिए वैज्ञानिक शोध प्रयोगशाला का कार्य किया।²²

5. कृषि के पूरक घटक: खादी, कुटीर उद्योग और समग्र ग्राम संगठन

गांधी का स्पष्ट मानना था कि कृषि अकेले ग्रामीण आबादी को वर्ष भर पूर्ण रोजगार नहीं दे सकती, क्योंकि कृषि मौसमी होती है। वर्ष के 4 से 6 महीने कृषक वर्ग अर्द्ध-बरोजगार रहता है।

खादी: ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सूर्य

गांधी ने चरखे को ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सूर्य माना जिसके चारों ओर अन्य सभी ग्रामोद्योग ग्रहों की तरह घूमते हैं।²³ कपास उगाने वाले किसान से लेकर धुनने वाले, कातने वाले, बुनने वाले और रंगरेज तक—खादी उत्पादन श्रृंखला ने गाँव के धन को शहर जाने से रोका और स्थानीय रोजगार का चक्र सुदृढ़ किया।²⁴

पारंपरिक ग्रामोद्योगों का पुनरुद्धार

गांधी ने गुड़ उद्योग, मधुमक्खी पालन, हाथ का कागज़, मिट्टी के बर्तन और चमड़ा उद्योग के वैज्ञानिक सुधार पर जोर दिया। मृत पशुओं के चमड़े के वैज्ञानिक उपयोग (flying and tanning) के लिए उन्होंने बाकायदा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए ताकि ग्रामीण अछूत माने जाने वाले वर्गों का आर्थिक सशक्तीकरण हो सके।²⁵

गांधीवादी ग्राम मॉडल (आदर्श)	आधुनिक औद्योगिक कृषि मॉडल
उत्पादन का आधार	स्थानीय आवश्यकता एवं विकेंद्रीकृत व्यवस्था
ऊर्जा का स्रोत	मानव श्रम, पशु ऊर्जा एवं सौर ऊर्जा
उर्वरक/कीटनाशक	कंपोस्ट, गोबर खाद, गोमूत्र एवं नीम-आधारित अर्क
पारिस्थितिकीय प्रभाव	मृदा का संवर्धन, जल संचयन एवं जैव विविधता संरक्षण
सामाजिक प्रभाव	आत्मनिर्भरता, सहकारिता और गाँव में रोजगार

6. समकालीन परिप्रेक्ष्य में गांधीवादी कृषि दर्शन की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में भारत सहित समूचा विश्व जिस कृषि संकट से जूझ रहा है, उसकी जड़ें उसी अनियंत्रित औद्योगीकरण में हैं जिसके प्रति गांधी ने 1909 में *हिंद स्वराज* में सचेत किया था।²⁶

1. **ऋणग्रस्तता और लागत संकट:** रासायनिक खाद, संकर बीजों और मशीनरी के अत्यधिक उपयोग से खेती की लागत बढ़ी है, जिससे किसान कर्ज के जाल में फंसा है। गांधी का कम लागत वाला स्थानीय मॉडल इस संकट का व्यावहारिक विकल्प प्रस्तुत करता है।²⁷
2. **प्राकृतिक खेती (ZBNF):** आज जिस 'शून्य बजट प्राकृतिक खेती' की चर्चा नीति आयोग और वैश्विक स्तर पर हो रही है, वह अनिवार्य रूप से गांधी के गो-आधारित और कंपोस्ट-केंद्रित कृषि विचारों का ही तकनीकी विस्तार है।²⁸
3. **जलवायु परिवर्तन और खाद्य संप्रभुता:** वैश्विक तापमान वृद्धि के दौर में बड़े पैमाने की औद्योगिक कृषि भारी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती है। गांधी का स्थानीयकृत उत्पादन और उपभोग चक्र कार्बन फुटप्रिंट को न्यूनतम करने का सबसे टिकाऊ उपाय है।²⁹
4. **ग्रामीण पलायन की रोकथाम:** महानगरों की झुगियों में नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर ग्रामीण युवाओं को यदि गाँव में ही कृषि-प्रसंस्करण और कुटीर उद्योगों के माध्यम से
5. सम्मानजनक रोजगार मिले, तो अनियोजित शहरीकरण की समस्या नियंत्रित हो सकती है।³⁰

7. निष्कर्ष

महात्मा गांधी का कृषि एवं ग्राम विकास संबंधी दर्शन कोई पुरातनपंथी या तकनीक-विरोधी हठधर्मिता नहीं थी; बल्कि यह प्रकृति के नियमों, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित एक सुविचारित विकल्प था। गांधी ने यह भली-भांति समझ लिया था कि भारत की समृद्धि गगनचुंबी इमारतों या विशाल कारखानों में नहीं, बल्कि उसके हरे-भरे खेतों और स्वावलंबी गांवों में सुरक्षित है। आज जब दुनिया मृदा के मरुस्थलीकरण, किसानों की आत्महत्याओं और पारिस्थितिकीय असंतुलन के दौराह पर खड़ी है, तब गांधी का ग्राम स्वराज और उनकी अहिंसक कृषि दृष्टि केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व और पोषण की अनिवार्य आवश्यकता बनकर उभरती है।

सन्दर्भ सूची

1. गांधी एमके. ग्रामोद्योग और राष्ट्रीय अस्तित्व. हरिजन. 1936;4(33):225-227.
2. कुमारप्पा जेसी. इकोनॉमी ऑफ परमानेंस: अहिंसा पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की खोज. अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ; 1945. पृ. 48.
3. मशरूवाला केजी. गांधी और मार्क्स. नवजीवन ट्रस्ट; 1951. पृ. 32.
4. शुमाकर ईएफ. स्मॉल इज ब्यूटीफुल: अर्थशास्त्र जिसमें लोग मायने रखते हैं. ब्लॉन्ड एंड ब्रिग्स; 1973. पृ. 154.

5. गांधी एमके. मेरे ग्राम स्वराज की कल्पना. हरिजन. 1942;10(26):197-199.
6. गांधी एमके. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. देसाई एम, अनुवादक. नवजीवन ट्रस्ट; 1927. पृ. 365.
7. बोस एमके. गांधी के चयनित विचार. नवजीवन ट्रस्ट; 1948. पृ. 77.
8. गांधी एमके. न्यासिता (ट्रस्टीशिप) का सिद्धांत. हरिजन. 1939;7(14):111-113.
9. पटेल बीआर. गांधीवादी न्यासिता और ग्रामीण विकास. इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स. 1986;41(3):91-98.
10. मीरा बेन. कंपोस्ट और ग्रामीण पुनर्निर्माण के साथ मेरे प्रयोग. सेवाग्राम आश्रम प्रेस; 1952. पृ. 45.
11. गांधी एमके. ग्राम स्वच्छता और खाद निर्माण. हरिजन. 1935;3(1):67-69.
12. कुमारप्पा जेसी. ग्राम आंदोलन क्यों? ग्राम-केंद्रित आर्थिक व्यवस्था का एक निवेदन. हिंदुस्तान पब्लिशिंग कंपनी; 1946. पृ. 89.
13. अग्रवाल एसएन. द गांधियन प्लान ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट फॉर इंडिया [भारत के आर्थिक विकास की गांधीवादी योजना]. पद्म पब्लिकेशंस; 1944. पृ. 102.
14. गुहा आर. गांधी: वो वर्ष जिन्होंने दुनिया बदल दी, 1914-1948. अल्फ्रेड ए. नॉफ; 2018. पृ. 412.
15. गांधी एमके. फसल प्रारूप और ग्राम स्वावलंबन. हरिजन. 1940;8(22):214-216.
16. गांधी एमके. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. देसाई एम, अनुवादक. नवजीवन ट्रस्ट; 1927. पृ. 248.
17. प्रभु आरके, राव यूआर, संपादक. महात्मा गांधी के विचार. नवजीवन ट्रस्ट; 1967. पृ. 134.
18. टेंडुलकर डीजी. महात्मा: मोहनदास करमचंद गांधी का जीवन. खंड 1. विठ्ठलभाई के झवेरी एवं डीजी टेंडुलकर; 1951. पृ. 245.
19. हार्डीमैन डी. गुजरात के किसान राष्ट्रवादी: खेड़ा जिला, 1917-1934. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1981. पृ. 128.
20. नंदा बीआर. महात्मा गांधी: एक जीवनी. जॉर्ज एलन एंड अनविन; 1958. पृ. 389.
21. प्यारेलाल. महात्मा गांधी: अंतिम चरण. खंड 2. नवजीवन ट्रस्ट; 1958. पृ. 176.
22. कुमारप्पा जेसी. गांधीवादी आर्थिक चिंतन. लाइब्रेरी ऑफ इंडियन इकोनॉमिक्स; 1951. पृ. 64.
23. गांधी एमके. चरखे का संगीत. यंग इंडिया. 1921;3(29):73-75.
24. ग्रेग आरबी. भारतीय आर्थिक विकास का दर्शन. नवजीवन ट्रस्ट; 1958. पृ. 82.
25. वर्मा वीपी. महात्मा गांधी और सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल; 1990. पृ. 142.
26. गांधी एमके. हिंद स्वराज. नवजीवन ट्रस्ट; 1909. पृ. 56.
27. शिवा वी. द वॉयलेंस ऑफ द ग्रीन रिवोल्यूशन: तीसरी दुनिया की कृषि, पारिस्थितिकी और राजनीति. जेड बुक्स; 1991. पृ. 112.
28. खादसे ए. रॉसेट पीएम, मोरालेस एच, फर्ग्यूसन बीजी. कृषि-पारिस्थितिकी को व्यापक स्तर पर ले जाना: कर्नाटक, भारत में शून्य बजट प्राकृतिक खेती किसान आंदोलन. द जर्नल ऑफ पीजेंट स्टडीज. 2018;45(1):192-219.
29. ब्राउन जेएम. गांधी: प्रिजनर ऑफ होप. येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 1989. पृ. 134.
30. राव वीकेआरवी. ग्रामीण विकास और गांधीवादी विकल्प. सोशल साइंटिस्ट. 1982;10(4):83-92.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author



डॉ. नीरज कुमार निर्मल तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत के गांधी विचार विभाग में शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि गांधीवादी दर्शन, सत्य, अहिंसा, ग्राम स्वराज, सर्वोदय, सामाजिक न्याय तथा ग्रामीण विकास के अध्ययन एवं अनुसंधान में है। वे गांधीवादी विचारधारा के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन की संभावनाओं का अध्ययन करते हैं।